Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences **ISSN: 2581-6241** **Volume - 2, Issue - 4, July-August – 2019**
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal **Impact Factor: 1.847**
Received on : 02/08/2019 **Accepted on : 19/08/2019** **Publication Date: 31/08/2019**

Þek/;fed Lrjh; fo|fFk;ksa dk lkekftd vkfFkZd Lrj dk laosxkRed fLFkjrk ,oa lkekftd lek;kstu ij izHkko dk v/;;uß

[1] **संजीव कुमार**
शिक्षा विभाग, बिड़ला परिसर
हे. न. ब. ग. केन्द्रीय वि"वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड़।
Sanjeevnath1985@gmail.com

[2] **रश्मि**
शिक्षा विभाग, बिड़ला परिसर
हे. न. ब. ग. केन्द्रीय वि"वविद्यालय,
श्रीनगर गढ़वाल उत्तराखण्ड़।
Rashmichauhan005@gmail . com

सारांश: प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में श्रीनगर, गढ़वाल (उत्तराखण्ड़) के माध्यमिक स्तर के 4 विद्यालयों में 100 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। आंकड़ो के संकलन के लिए डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी के दो आयामों (संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन) का प्रयोग किया। सांख्यिकीकरण के लिए माध्यमान, मानक विचलन, टी परीक्षण एवं प्रति"ात मान का प्रयोग किया गया है। उद्दे"यों, के आधार पर प्रथम निर्धारित प्रथम शून्य परिकल्पना उच्च एवं निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर छात्र एवं छात्राओं के मध्य संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन में सार्थक अन्तर पाया गया, द्वितीय परिकल्पना में दो मनोवैज्ञानिक चरों में छात्र एवं छात्राओं में कोई सार्थक नही है।

e[; fcUnq % संवेगात्मक स्थिरता, समाजिक समायोजन, समाजिक आर्थिक स्तर आदि।

प्रस्तावना:

मानव जीवन की मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं में से किशोरावस्था एक ऐसी अवस्था है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सांवेगिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक व्यवहार परिवर्तन प्रभावी ढ़ग से होते दिखाई देते हैं। इस सभी परिवतनों में से सांवेगिक परिपक्व व्यक्ति जीवन मे सामंजस्य अभिवृत्ति को प्रस्तुत करता है। जिसमें मनुष्य स्वयं तथा समाज के साथ अधिक अच्छा सामंजस्य बना पाता है। व्यक्ति जो अपने संवेगो को नियंत्रित करने, विलम्बता को तोड़ने और सहन करने की क्षमता, एवं संवेगिक अचेतन मे रहने में सक्षम होता है, वही सांवेगिक रूप से परिपक्व कहता है। संवेगात्मक स्थिरता, प्रगति, समाजिक समायोजन, व्यक्तित्व एकीकरण एवं किसी पर आश्रित न होना संवेगात्मक परिपक्वता को प्रदर्शित करता है। कोले (2008) के अनुसार ''सांवेगिक परिपक्वता तनाव सहन करने की योग्यता है जिसमें वह स्वयं की क्षमताओं को दृढ़ उचित संतुलन बनाए रखता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी के रूप में अपने जीवन का आरम्भ अपने परिवार से करता है जहॉ उसका पालन पोषण नियमित रूप से संचालित होता है। किसी भी परिवार की सामाजिक–आर्थिक स्थिति जन्म से ही बच्चों के अनेक मनोवैज्ञानिक चरों को प्रभावित करता है। परिवार की आय, सदस्यों की संख्या, परिवार का व्यवसाय एवं शिक्षा स्तर तथा व्यवस्था सामाजिक–आर्थिक स्तर में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिवार के सामाजिक–आर्थिक स्तर को मुख्यतहः तीन (उच्च, मध्यम तथा निम्न) सामाजिक–आर्थिक स्तर में रखा जाता है। यह स्तर (आय, शिक्षा, व्यवसाय एवं धन आदि) के आधार पर निर्धारित किया जाता है। विद्यालयी एक ऐसा स्थान होता है, जहॉ विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं। उनकी क्षमताएं, अभिवृत्तियां, महत्वकांक्षाएं, उनके स्तर से प्रभावित होती है। सामाजिक–आर्थिक स्तर छात्रों की अभिवृत्तियों तथा कौशलों को जो वह विद्यालय में सीखता है, प्रभावित करता है।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण — यशोधा और कर्नाल ¼2017½ ने ''तिरूवल्लूर जिले में हाईस्कूल छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा निर्णय क्षमता का अध्ययन'' प्रस्तुत शोध में 300 छात्रों का यादृच्छिक चयन किया तथा पाया कि छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता और निर्णय क्षमता के बीच सार्थक संबंध है। शर्मा] ¼2017½ ने ''सरकारी एवं निजी माध्यमिक

विद्यालयों के छात्रों की संवेगात्मक स्थिरता और सामाजिक–आर्थिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन'' प्रस्तुत शोध में नोएडा के 100 छात्रों (30 छात्र 50 छात्राएं) का चयन किया और पाया कि निजी व सरकारी छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्तरा में कोई सार्थक अंतर नहीं है। 0;kl] vkj jfo ½2017½ ने ''किशोरों की सांवेगिक परिपक्वता, आत्मवि"वास तथा शैक्षिक उपलब्धि का उनके लिंग, ग्रामीण–शहरी पृष्ठभूमि के आधार पर अध्ययन'' प्रस्तुत शोध में राजस्थान के जोधपुर जिले के 200 छात्रों (100 छात्र तथा 100 छात्राएं) का चयन किया तथा पाया कि छात्र तथा छात्राओं की सांवेगिक परिपक्वता में कोई सार्थर अंतर नहीं है। cxe] vkj lRlxh] ½2017½ ने ''संवेगात्मक परिपक्वता, बुद्धि और शैक्षिक उपलब्धि''। प्रस्तुत शोध में 100 छात्रों कला तथा विज्ञान वर्ग (25 छात्र तथा 25 छात्राएं) का यादृच्छिक चयन कर शोध किया तथा पाया कि उच्च तथा निम्न बुद्धि तथा संवेगात्मक परिपक्वता के बीच सार्थक अंतर है। **कला और माहेश्वरी** ½2016½ ने ''परास्नातक छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन''। प्रस्तुत शोध में पैराम्बदूर के भारतीदासम् वि"वविद्यालय के 160 परास्नातक छात्रों का चयन कर प्र"नावली विधियों का प्रयोग किया तथा पाया 45.5 प्रतिशत छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता का स्तर उन्नत है। **गुनशेखर और पुगलेन्थी** ½2015½ ने '' माध्यमिक स्तर पर छात्रों की संवेगात्मक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन''। प्रस्तुत शोध में 100 विद्यार्थियों (50 छात्र एवं 50 छात्राएं) का यादृच्छिक चयन कर स्वनिर्मित उपकरण तथा 10वीं कक्षा के प्राप्तांकों के आधार पर निष्कर्ष दिया। छात्र तथा छात्राओं की संवेगात्मक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। छात्र तथा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धी में भी कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध उद्देश्य :

- माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के समाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना :

- माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के समाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनके संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन पर प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
- माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध सीमांकन :

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जो कक्षा 9 से 10 में (12 से 18 वर्ष आयु वर्ग) छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक (सर्वेक्षण) विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में 100(50 छात्र एवं 50 छात्राओं) का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध में डॉ. महेश भार्गव द्वारा वर्णित संवेगात्मक परिपक्वता मापनी का प्रयोग कर मापनी में निहित दो आयाम संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन से सम्बन्धित प्राप्तांकों का प्रयोग शोध के लिए किया गया। शोध मापनी में प्राप्तांको से सम्बन्धित निदेश के अन्तर्गत निदेश है कि प्राप्तांको की अधिकता संवेगात्मक परिपक्वता (सभी आयामों)में निम्नता एवं प्राप्तांकों की निम्नता संवेगात्मक परिपक्वता (सभी आयामों) को उच्च रूप में दर्शाती है। द्वितीय उपकरण सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि में 30 एकांशो का चयन विशेषज्ञों के माध्यम से किया गया। शोध के लिए अनुमानित एवं वर्णात्मक सांख्यिकी (मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण) का प्रयोग किया गया।

lknRrk dk विश्लेषण ,oa 0;k[;k & rkfydk la[;k 1- सामाजिक आर्थिक स्तर का लिंग, विशय एवं क्षेत्र का प्रतिशत ds vk/kkj ij fooj.kA

foHkktu dk vk/kkj		lkekftd vkfFkZd Lrj					
		mPp Lrj		vkSlru Lrj		fuEu Lrj	
		dqy fo|kFkhZ	प्रतिशत	dqy fo|kFkhZ	प्रतिशत	dqy fo|kFkhZ	प्रतिशत
fyax	छात्र	6	12.0%	22	44.0%	22	44.0%
	छात्रा	19	38.0%	18	36.0%	13	26.0%
fo"k;	कला	11	22.0%	23	46.0%	16	32.0%
	विज्ञान	14	28.0%	17	34.0%	19	38.0%
{ks=	शहरी	13	26.0%	18	36.0%	19	38.0%
	ग्रामीण	12	24.0%	21	42.0%	17	34.0%

तालिका सख्ंया 1.0 के अवलोकन से ज्ञात हुआ कि माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् विद्यार्थियों को सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया गया। जिसमें लिंग के आधार पर औसतन एवं निम्नतम स्तर पर 44 प्रतिशत तथा उच्च स्तर पर 12 प्रतिशत छात्र पाये गये, वही 19 प्रतिशत उच्च, 18 प्रतिशत औसत एवं 13 प्रतिशत निम्न स्तर की छात्राओं पायी गयी। विषय के आधार पर 46 प्रतिशत औसत, 32 प्रतिशत निम्न तथा 22 प्रतिशत उच्च स्तर की छात्र कला वर्ग के पाये गये, तथा विज्ञान वर्ग में 38 प्रतिशत निम्न, 34 प्रतिशत औसत तथा 28 प्रतिशत उच्च स्तर के विद्यार्थी पाये गये। शहरी क्षेत्र के आधार पर 38 प्रतिशत निम्न, 36 प्रतिशत औसत एवं 26 प्रतिशत उच्च विद्यार्थी पाये गये, तथा ग्रामीण क्षेत्र में 42 प्रतिशत औसत, 34 प्रतिशत निम्न तथा 24 प्रतिशत निम्न क्षेत्र में पाये गये।

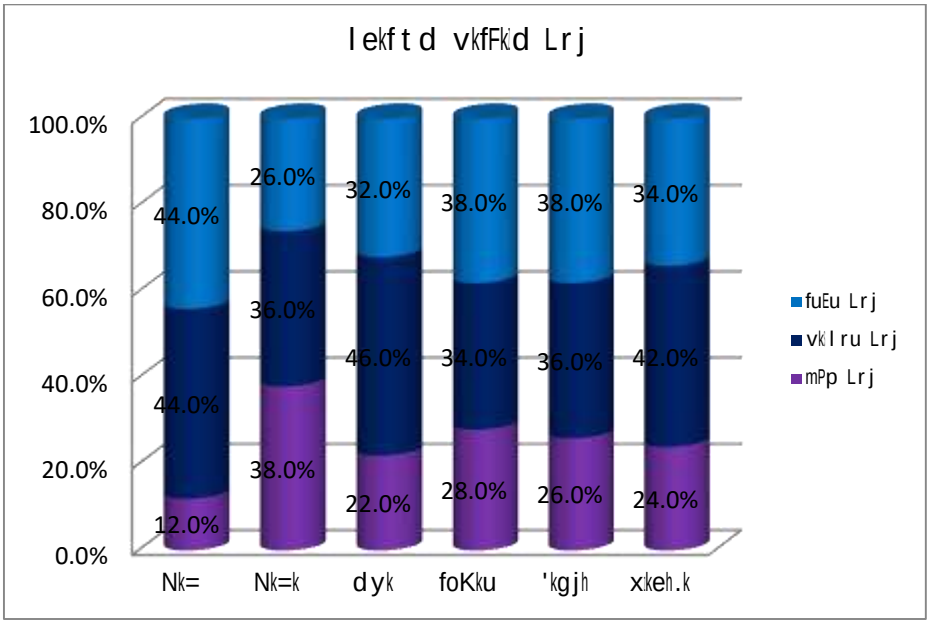

vkjs[k la[;k 1-0 esa लिंग, विशय एवं क्षेत्र ds vk/kkj ij lkekftd vkfFkZd Lrj dk fooj.kA

Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 4, July-August – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 02/08/2019 Accepted on : 19/08/2019 Publication Date: 31/08/2019

आरेख संख्या 1.0 के अवलोकन से ज्ञात हुआ, कि लिंग के परिपेक्ष्य में औसत एवं निम्न स्तर के विद्यार्थी उच्च स्तर से अधिक छात्र पाये गये, तथा छात्राओं में सर्वाधिक प्रतिशत उच्च स्तर के सामाजिक– आर्थिक स्तर की पायी गयी। विज्ञान वर्ग की अपेक्षा कला वर्ग में औसत स्तर के विद्यार्थी आधिक पाये गये। अन्त में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का औसत सामाजिक आर्थिक स्तर शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया।

rkfydk l[;k & 2-0 fo|kFk;k d lkekftd vkfFkd fLFkfr ij vk/kkfjr loxkRed fLFkjrk ,o lkekftd lek;ktu d e/;eku ,o ekud fopyu dk fooj.kA

eukoKkfud pj	Lrj	dy fo|kFkh	e/;eku	ekud fopyu	Vh eku	ih eku ,o lkFkdrk
loxkRed fLFkjrk	उच्च स्तर	25	15.84	7.069	9.24	0.00S
	निम्न स्तर	36	34.78	8.374		
lkekftd lek;ktu	उच्च स्तर	25	14.12	5.925	7.88	0.00S
	निम्न स्तर	36	29.19	8.176		

तालिका संख्या 2.0 के अवलोकन से ज्ञात हुआ होता है, कि उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थी से प्राप्त संवेगात्मक स्थिरता का टी मान 9.24 (स्वतन्त्रता का स्तर =59) सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक सिद्ध होता है। निष्कर्ष के रूप में निर्धारित शून्य परिकल्पना को अस्वीकर कर कहा जा सकता है, कि उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता के मध्य अन्तर पाया जाता है। समाजिक समायोजन से प्राप्त आंकड़ो का टी मान 7.88 (स्वतन्त्रता का स्तर =59) सार्थकता स्तर 0.01 पर सार्थक सिद्ध होता है। निष्कर्ष के रूप में निर्धारित शून्य परिकल्पना को अस्वीकर कर कहा जा सकता है, कि उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के समाजिक समायोजन के मध्य अन्तर पाया जाता है।

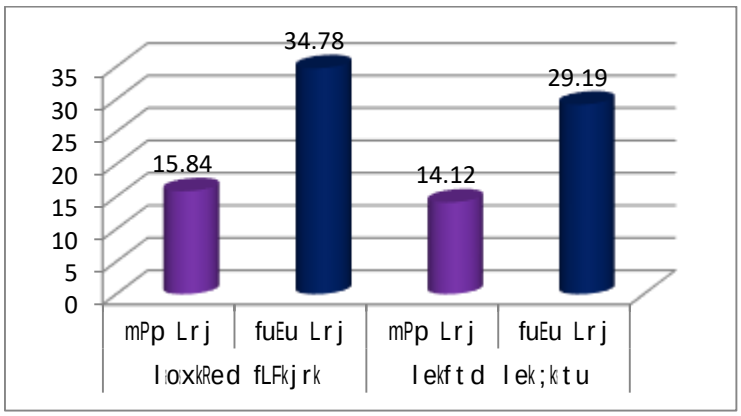

vkjs[k l[;k 2-0 loxkRed fLFkjrk ,o lkekftd lek;ktu d e/;ekuk dk fooj.kA

आरेख संख्या 2.0 के प्रर्दशन से स्पष्ट होता है, कि (शोध उपकरण के आधार पर) उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियॉ को संवेगात्मक स्थिरता एवं सामाजिक सामायोजन अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

rkfydk l[;k 3 fo|kFk;k d loxkRed fLFkjrk ,o loxkRed fLFkjrk lEcfU/kr e/;eku] ekud fopyu ,o Vh eku dk fooj.kA

eukoKkfud pj	vk;ke	e/;eku	ekud fopyu	Vh eku	ih eku ,o lkFkdrk
loxkRed fLFkjrk	छात्र	26.56	9.620	1.79	0.08 NS
	छात्रा	22.98	10.407		

lekftd lek;ktu	छात्र	23.24	8.404	2.22	0.03 NS
	छात्रा	19.42	8.769		

तालिका संख्या 3.0 के अवलोकन से ज्ञात हुआ होता है, कि छात्र एवं छात्राओं से प्राप्त प्राप्तांको का संवेगात्मक स्थिरता का टी मान =1.79, पी मान=0.03 (स्वतन्त्रता का स्तर =98) सार्थकता स्तर 0.05 पर असार्थक सिद्ध होता है। निष्कर्ष के रूप में निर्धारित शून्य परिकल्पना को स्वीकर कर कहा जा सकता है, कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य संवेगात्मक स्थिरता के मध्य अन्तर नही पाया जाता है। समाजिक समायोजन से प्राप्त आंकड़ो का टी मान = 2.22, पी मान=0.03 (स्वतन्त्रता का स्तर =98) सार्थकता स्तर 0.05 पर असार्थक सिद्ध होता है। निष्कर्ष के रूप में निर्धारित शून्य परिकल्पना को स्वीकर कर, कहा जा सकता है, कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य समाजिक समायोजन के मध्य अन्तर नही पाया जाता है।

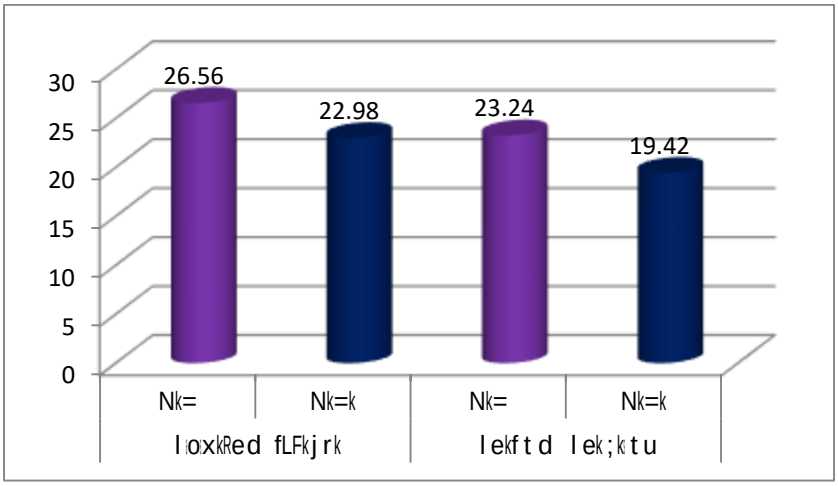

आरेख संख्या 2.0 के प्रर्दशन से स्पष्ट होता है, कि (शोध उपकरण के आधार पर) छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का संवेगात्मक स्थिरता एवं सामाजिक सामायोजन अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है।

निष्कर्ष एवं परिणाम :

समाजिक–आर्थिक स्तर का किशोरों के संवेमात्मक स्थिरता एवं समाजिक समाय पर प्रभाव का अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष निम्न लिखित है। वर्णात्मक सांख्यिकी के आधार पर लिंग के परिपेक्ष्य में औसत एवं निम्न स्तर के विद्यार्थी उच्च स्तर से अधिक छात्र पाये गये, तथा छात्राओं में सर्वाधिक प्रतिशत उच्च स्तर के सामाजिक– आर्थिक स्तर की पायी गयी। विज्ञान वर्ग की अपेक्षा कला वर्ग में औसत स्तर के विद्यार्थी आधिक पाये गये। अन्त में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों का औसत सामाजिक आर्थिक स्तर शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों से अधिक पाया गया। निष्कर्ष के रूप में निर्धारित शून्य परिकल्पना को अस्वीकर कर, कहा जा सकता है, उच्च एवं निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों के संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन के मध्य अन्तर पाया जाता है, तथा उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के विद्यार्थियॉ को संवेगात्मक स्थिरता एवं सामाजिक सामायोजन अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के परिवारों में सदस्यों की शिक्षा, व्यवहार एवं पारिवारिक वातावरण किशोरों के संवेगों को स्थिर करने तथा समाज में स्वयं को समायोजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अन्य शून्य परिकल्पना के निष्कर्ष एवं परिणाम के आधार पर कहा जाता है, कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य संवेगात्मक स्थिरता एवं समाजिक समायोजन के मध्य अन्तर नही पाया जाता है। छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का संवेगात्मक स्थिरता एवं सामाजिक सामायोजन अपेक्षाकृत उच्च पाया गया है। गुनशेखर, और पुगलेन्थी (2015) कला और माहे"वरी, (2016) व्यास, और रवि (2017) यशोधा और कर्नाल, (2017) शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं परिणाम प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित है।

lUnHkZ xzUFk lwph:

1. Begum, Aisha & Satsangi, Archana (2017), "Emotional maturity intelligence and academic streams", ISSN. P, 0976-8602, Vol.6, issue-iii.
2. Gunasekar, S. & pujalinthi, N. (2015) "A study of emotional maturity and academic achievement of students at secondary level." *Shanlax international journal of education,* ISSN: 2320-2653, vol. 3, no.4.
3. Kalaiselvan, S & Maheshwari, K. (2016) "A study on emotional maturity among the post graduate students." *Journal of humanities and social science*, vol.21, ISSUE 2, ver-iii (feb) pp-32-34
4. Sharma, & Suraksha (2017), "A comparative study of emotional stability and socio-economic status of secondary students studying in govt. And public school" *international and education and research journal*, issn-2454-9916, vol.3, ISSUE-6.
5. Vyas, & Gunthey, (2017) "Emotional maturity self confidence and academic achievement of adolescents in relation to their gender and urban-rural background." *The international journal of indian psychology*. ISSN: 2348-5396 (e), issn:2349-3429 (p), vol. 4, issue4 .
6. Yashotha & karan P. (2017). "A study of emotional maturity and decision making among high school students in thiruvallur district." *International education scientific journal research*, E-ISSN no. 2455-29sx, vol-3, issue-4.
7. गुप्ता, डॉ. एस.पी., एवं गुप्ता, डॉ. अल्का (2009) 'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'।
8. सिंह, अरूण कुमार (2011) 'उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान'सिंह, अरूण कुमार 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा मनोविज्ञान'।